नवम्बर–दिसम्बर 2021

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

मोरंगा

बाल पत्रिका

इस बार

खेल खिलाड़ी

5 खेल से बने दोस्त

उड़ान

7 गाँव बना शहर

8 लालच

9 मानवीय मूल्यों का संगम

12 पतंग उड़ी / बाल श्रृंगार

13 चिड़िया रानी / फूलों का पेड़

ज्ञान विज्ञान

14 कपाल क्रिया

जोड़–तोड़

15 बंटवारा

कलाकारी

17 सतीश गुजराल

बात लै चीत ले

19 स्कूल मेरा घौंसला

20 समुद्र तट की सैर

21 माथापच्ची / हीहीही–ठीठीठी

22 कुछ हमने बढ़ायी, कुछ तुम बढ़ाओ

मुस्कान, उम्र–9 वर्ष, बावरी बस्ती स.मा.

सम्पादन : विष्णु गोपाल
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : सुरेश चंद
वितरण : लोकेश राठौर
आवरण चित्र : **फूलवती**, उम्र–7 वर्ष, बावरी बस्ती स.मा.
वर्ष 13 अंक 137–138

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, व एच.टी. पारेख के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
शुभम गर्ग
निदेशक,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957

परिचय

कोमल बैरवा, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर–सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम–1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरुआत वर्ष 2004 में गाँव–जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरुआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे

बढ़ाया। इसके पश्चात 2007 में बोदल गाँव में, 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला सफलतापूर्वक शुरुआत की गई। ये तीनों उदय पाठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे अधिक प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, जो इनके रहन–सहन, खान–पान, आजीविका, संस्कृति, रीति–रिवाज, बोली–भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खोखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्ता शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम – 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष–2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाषन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुँचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

खेल से बने दोस्त

मनीषा सैनी, कक्षा–10, उमंग

मैं गिरिराजपुरा में रहती हूँ। मेरा गाँव जंगल से विस्थापित हुआ है। जब मैं स्कूल गई तो मैं वहाँ किसी को नहीं जानती थी। इसलिए कोई मुझसे बात भी नहीं करता था और मैं अकेले बोर होती रहती थी। कक्षा में तो फिर भी कुछ काम करते हुए समय का पता नहीं चलता था। पर रेस्ट या छुट्टी में बहुत बुरा लगता। हर कोई किसी ना किसी के साथ बात–चीत या खेल में मस्त रहता और मैं अकेले। जिसकी वजह से छुट्टी होते ही घर चली जाती। मन में खयाल आता कि स्कूल जाना ही बंद कर देती हूँ।

स्कूल में बहुत सी लड़कियों को हैण्डबॉल खेलते देखती थी। खेल तो मुझे भी आते थे पर यहाँ जो होता था वह सब मेंरे लिए नया और अनजान था। मैने तो हैण्डबॉल का नाम भी नही सुना था। मुझे षहरों में खेलने वाले खेल नहीं आते थे। यह खेल मेरे लिए अनजान था। सबको इतना खुष देखकर मैं मन में सोचा करती, ''काश मैं भी हैंडबॉल खेलती।'' पर मुझे उसके नियम नहीं आते थे। ना ही मैं उनकी तरह कर सकती थी। इसलिए मुझे कोई भी लड़की हैण्डबॉल नहीं खिलाती थी। यहाँ पर दो लड़की थी जिनका नाम मनीषा और कोमल था। बड़ी हिम्मत करके जब मैंने इनसे अपने मन की बात कही तो दोनों लड़की मुझे हैण्डबॉल सिखाने लगी। थोड़ा सा जानने के बाद मैंने गुरूजी से डरते व शरमाते हुए कहा, ''गुरूजी मुझे भी हैण्डबॉल खिलाओ।'' फिर गुरूजी ने मुझे भी हैण्डबॉल खिलाई।

मैं रोज लंच में हैंडबॉल निकालकर खेला करती। हैंडबॉल का आकार इतना बड़ा था कि मैं तो उसे एक हाथ से पकड़ भी नहीं पाती थी। सबसे पहले मैंने हैण्डबॉल को पकड़ना सीखा। अब मैं उसे एक हाथ में लेकर फेंकने लगी थी। फिर मैं बड़ी

लड़कियों के साथ खेलने लगी। वे मुझे गोल पर खड़ा करती थी। मैं आगे खेलना चाहती थी पर गोल पर खड़े होकर गोल बचाना भी मुझे अच्छा लगने लगा। मैं बॉल को निकलने नहीं देती थी और किसी को गोल नहीं करने देती थी। पर जब गोल हो जाता तो सब मुझे ऐसे देखते जैसे सारी गलती मेरी है। यह बात मुझे अच्छी नहीं लगती थी।

एक दिन गुरूजी ने मुझसे कहा, ''किसी को भी गोल मत करने देना और उसकी आँखों पर ध्यान रखना।'' तब से मैं उनकी तरफ ध्यान रखने लगी। धीरे–धीरे मेरा खेल सुधरने लगा। इसकी वजह से गुरूजी ने मुझे टीम में ले लिया और बोले, ''अगर तुमने अच्छी तरह से तैयारी की तो अगली बार स्कूल टीम में तुम्हे ले जाऊगां।'' यह सुनकर मैं बहुत खुष हुई और एक लड़की के साथ हैण्डबॉल खेलने लगी। मैं कुछ और दिनों में अच्छी तरह से हैण्डबॉल खेलना सीख गई। जो लड़की मुझे हैण्डबॉल नहीं खिलाती थी वह भी मुझे हैण्डबॉल खिलाने लग गई। लड़कियों के साथ खेलने में मुझे अच्छा महसूस होता। मैं अब 13 साल की हो गई हूँ और मैं कक्षा 7वीं की विद्यार्थी हूँ। मेरे बहुत सारे दोस्त हैं। सब मुझे पसंद करते हैं और मेरे साथ खेलना चाहते हैं। मैं बहुत खुष रहती हूं। छुट्टी के बाद भी स्कूल से जाने का मन नहीं करता। मेरा स्कूल अब मेरी मन पसंद जगह बन गई है यह सब खेलने की वजह से हुआ।

प्रिया, समूह–झरना, उम्र–13 वर्ष

देवेन्द्र माली, राजकीय अपर प्राइमरी स्कूल रामसिंहपुरा

उड़ान

आरती नायक, उम्र–12 वर्ष
उदय सामुदायिक
पाठशाला कटार

एक गाँव बना शहर

एक बार एक आदमी था। उसने सोचा कि हम अपने गाँव को शहर बनायें जिससे हमारे गाँव का नाम रोशन होगा। फिर उसने गाँव वालों से बात की। गाँव वालों ने कहा हम गाँव को शहर कैसे बनायेंगे। उस आदमी ने कहा पहले तो हम स्कूल बनायेंगे, फिर हम बाजार बनायेंगे। उन्होंने स्कूल और बाजार बनाया। फिर उस आदमी ने कहा अब हम बच्चों की ड्रेस के कपड़ों की दुकान खोलेंगे। इससे लोगों को काम मिलेगा। सिलाई का काम भी यहीं होने लगेगा। बच्चों को पढ़ने के लिए कॉपी किताबों की भी जरूरत थी। जिसके लिए उनको षहर जाना होता था। उन्होने इसके लिए भी बाजार में दुकान खुलवाई। स्कूल में पढ़ाई भी अच्छी होने लगी। तो वहाँ पर धीरे–धीरे बाहर के बच्चे भी आने लगे। बाहर के बच्चों के रहने के लिए घर बने, हॉस्टल खुले। अब वह गाँव शहर के रूप में बदल गया। गाँव वाले बोले कि ''अब हमारे बच्चे भी पढ़ कर आगे बढ़ेंगे।''

भारती मीना, उम्र–11 वर्ष, समूह–रंगोली

लालच

गोलु नायक, उम्र–8 वर्ष
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

एक बार दो जानवर, हाथी और गिलहरी दोस्त थे। एक चूहा था उसे उनकी दोस्ती पसंद नहीं आती थी। चूहा उन दोनों दोस्तों को अलग करने का विचार सोचता रहता था। एक दिन हाथी और गिलहरी खेल रहे थे। चूहा वहाँ जाकर हाथी को चिढ़ाने लगा, ''तुम इतने छोटे जानवर के दोस्त हो।'' हाथी को सुनकर गुस्सा आया और कहा, ''मेरा कोई तो दोस्त है। परन्तु तुम्हारा तो कोई भी दोस्त नहीं है। तुम दूसरों को परेशान क्यों करते रहते हो?'' चूहा वहाँ से भाग गया और चूहों के राजा के पास गया।

उनसे कहा, ''राजाजी, मुझको हाथी नें डांटा है।'' राजा ने चूहे की बात पर यकीन कर लिया। और हाथी को सबक सिखाने का उपाय सोचा। उसने बहुत सारे केले मंगवाये और हाथी के पास गया और कहा, ''तुम उस गिलहरी से दोस्ती तोड़ दो। तुमने ऐसा कर दिया तो हम तुम्हें ये सारे केले दे देंगे।''

केले देखकर हाथी के मन में लालच आ गया। हाथी बोला, ''उस गिलहरी से दोस्ती तोड़ दूंगा।'' उसने बिना कारण गिलहरी से दोस्ती तोड़ दी। जब गिलहरी को बात पता चली तो उसे बहुत दुःख हुआ।

एक दिन हाथी शिकारियों के जाल में फंस गया। वह चिल्लाने लगा। गिलहरी ने उसकी आवाज सुन ली। वह वहाँ पर दौड़कर आ गई। उसने कहा, ''तेरे वे चूहे दोस्त आज तुम्हें बचाने क्यों नहीं आये?''

हाथी ने कहा, ''मुझे माफ कर दो। मुझसे गलती हो गई। मैंनें लालच के चक्कर में तुमसे दोस्ती तोड़ दी। हो सके तो मुझे माफ कर देना।'' नन्हीं गिलहरी को हाथी पर दया आ गई। उसने जाल काट कर हाथी को उस मुसीबत से बचा लिया। फिर वापस वे अच्छे दोस्त बन गये। फिर एक बार चूहे वापस आये। उन्हें तंग करने लगे तो हाथी ने उन सबको सूंड में भरकर भगा दिया। दोनों उस जंगल में अच्छे दोस्तों की तरह रहने लगे।

कुलदीप मीना, समूह–उजाला, उम्र–12 वर्ष

मानवीय मूल्यों का संगम

सूर्य की तेज प्रचंड धूप और भूख से चिड़ियाँ के बच्चे बहुत व्याकुल हो रहे थे। चिड़ियाँ बार–बार इधर से उधर जाती पर खाने को एक दाना तक नहीं मिलता और वह बड़े निराश मन से खाली हाथ ही आ जाती। दिनों दिन चिड़ियाँ की बैचेनी बढ़ती ही जा रही थी कि क्या करें, क्या ना करें? चिड़ियाँ के दो बच्चे थे वे अभी बहुत छोटे थे। चिड़ियाँ सोचने लगी अगर यहाँ इसी तरह बैठे रहेंगे तो बिना भोजन के वैसे ही एक दिन मर जायेंगे। मुझे कुछ करना चाहिए। ऐसा सोचकर चिड़ियाँ अपने पास में रहने वाली मोरनी के पास गई और उसे अपनी सारी वेदना सुनाई। ''मोरनी दीदी मैं और मेरे दोनों बच्चों ने लगभग 3 दिन से कुछ नहीं खाया है। आस–पास को कुछ नहीं मिल रहा है। समझ नहीं आ रहा है क्या करें, क्या ना करें?'' चिडियाँ की वेदना सुनकर मोरनी की आँखों में आंसू आ गये। ''क्या करूँ चिड़ियाँ बहन मेरी भी यही दशा हो रही है। मैंने भी कुछ समय पहले दो बच्चों को जन्म दिया था। वे भी भूख से तड़प कर मौत के मुँह में चले गये। अब मैं कुछ कीड़े–मकौड़े खाकर जैसे–तैसे अपना जीवन गुजार रही हूँ। परन्तु अब मुझे नहीं लग रहा कि यहाँ पर ज्यादा समय तक मैं भी जीवित रह सकती हूँ। अब हम इतने कमजोर हो गये हैं कि दूर तक उड़कर दूसरे गाँव तक भी नहीं जा सकते। कोई उपाय नजर ही नहीं आ रहा है, क्या करें?'' इन दोनों की करूणा भरी चर्चा को एक तोता ध्यान से सुन रहा था जो उसी पेड़ की डाली पर बैठा हुआ था। तोते ने बड़े ही कोमल स्वर में कहा, बहनों मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकता हूँ? तोते की वाणी को सुनकर दोनों पेड़ पर इधर–उधर देखने लगी और उन्हें ऐसा लगा मानों आज जीवन में पहली बार किसी ने अपना माना है। तोते के यह शब्द वर्णों की आकृतियाँ मात्र ही नहीं थे अपितु इन शब्दों में सहयोग, प्रेम, दया, करूणा, संवे. दनशीलता की एक अनोखी गंध आ रही थी। मोरनी ने अपने आंसूओं को पूछते हुए तोतो से कहा, ''भाई तुम तो बहुत छोटे हो भला हमारी मदद कैसे करोगे?'' तोते ने कहा ''देखो बहनों अभी लगभग सभी पक्षियों के भूख से प्राण संकट में हैं। आस–पास कहीं पर भी दाना खाने को नहीं है। अतः हमें अपने खान–पान में कुछ परिवर्तन करके अपने आप को जिन्दा रखना है।'' चिड़ियाँ बोली ''पर यहाँ तो कुछ भी खाने को नहीं है, क्या खायें?'' तोते ने कहा ''बहन तुम दोनों कुछ समय इस पेड़ के पत्तों को संकट का भोजन समझ कर खाओ। मैंने भी ऐसा ही किया है और पिछले 5 दिन से इन्हें ही खा रहा हूँ। इन पत्तों के खाने से मेरे शरीर को एक नई ताकत मिली है। परन्तु अब इस पेड़ के पत्तों की संख्या भी बहुत कम रह गई है।

अगर हम तीनों यहाँ रूकेंगे तो हमारे तीनों के प्राण निकल जायेंगे। तुम दोनों इन पत्तों को खाओ और मैं आपके बच्चों को अपने पंजों में दबाकर दूसरे गाँव में ले चलता हूँ। तुम्हारे शरीर में जब थोड़ी ताकत आ जाये तो अगले गाँव में चले आना।'' तोते की बात दोनों के हृदय उतर रही थी पर एक तरफ माँ की ममता चिड़ियाँ के अंदर छटपटा रही थी। एक माँ का बच्चे से अलग होने की जो मार्मिक पीड़ा है उसको शायद शब्दों में लिखकर तोला नहीं जा सकता पर चिड़ियाँ और मोरनी को भी इसके अलावा कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। चिड़ियाँ ने तोते का विश्वास करके अपने दोनों बच्चों को सोंप दिया। तोता चिड़ियाँ के दोनों बच्चें को पंजों में दबाकर उड़ता–उड़ता एक गाँव में पहुँच गया और एक बगीचे में आम के पेड़ पर बैठ गया। उसी समय बगीचे के मालिक की इकलोती बेटी शोभा अपने हाथ में मक्खन–रोटी लेकर खाती हुई आ रही थी। वह बगीचे में पक्षियों को उड़ाने के लिए आई हुई थी क्योंकि पक्षी उनके आमों को अपनी चोंच से खराब कर देते थे। तोते ने उसे देखकर मधुर स्वर में एक सुंदर सी कविता सुनाई।

हम हैं परदेशी जान
आये हैं तेरे द्वार
नन्हें मुन्ने बच्चे संग
दाना पानी मांगे तन में
दे दो हमको जान
आये हैं तेरे द्वार
आम तुम्हें बड़े रसीले
नहीं करेंगे इनको गीले
हम पर करो विश्वास
हम परदेशी जान

मनीष रेगर, कक्षा–8, राजकीय अपर प्राइमरी स्कूल कुतलपुरा

जब शोभा ने अपने बगीचे में इस संवेदना पूर्ण एवं मार्मिक वाणी को सुना तो उसका हृदय भाव विहल हो गया और चारों और देखने लगी। तभी उसकी नजर उस आम के पेड़ पर बैठे तोते व चिड़ियाँ के बच्चों पर पड़ी। शोभा ने इससे पहले अपने जीवन में कभी भी ऐसी करूण वाणी नहीं सुनी थी। शोभा पक्षियों की वाणी को समझती थी। उसने तुरंत तोते की और अपनी रोटी कर दी। तोता भी भूख से व्याकुल हो रहा था। उसने शोभा के हाथ से तुरंत रोटी और मक्खन ले लिया। मक्खन उसने चिडियाँ के बच्चों को खिला दिया और रोटी स्वयं खा गया। शोभा ने जब तोते के साथ चिडियाँ के छोटे बच्चों को देखा तो उसके मन में कई तरह के प्रश्न आने लगे। वह यह सब समझ नहीं पा रही थी कि आखिर तोता चिड़ियाँ

के बच्चे कहाँ से लाया और क्यों लाया? यह सब जानने के लिए शोभा ने तोते से पूछ ही लिया। तोते ने सारी बात शोभा को बताई। शोभा ने जब यह सब सुना तो वह बहुत दुःखी हुई। माँ के बिना ये बच्चे यहाँ कैसे रहेंगे? बिना बच्चों के उस माँ का क्या हाल हो रहा होगा जो जंगल में है। शोभा ने निश्चय किया कि वह अपनी बेलगाड़ी ले जाकर जंगल से इन बच्चों की माँ और मोरनी को अवश्य लायेगी। उसने अपने साथ खाने का पर्याप्त भोजन रख लिया और अपने साथ तोते और बच्चों को भी ले लिया ताकि मोरनी व चिड़ियाँ आसानी से साथ में आ सके। जब बेलगाड़ी जंगल में पहुँची तो सभी पक्षी डर गये। भूख से सभी बैचेन थे। चाहकर भी उनसे उड़ा नहीं जा रहा था। जब चिड़ियाँ ने बेलगाड़ी पर अपने दोनों बच्चों और तोते

प्रिया मीना, कक्षा–9, उमंग

को देखा तो चिड़ियाँ अपने आप को नहीं रोक पाई और तुरन्त बेलगाड़ी पर आ गई। माँ और बच्चों के अद्‌भुत मिलन को देखकर शोभा का सारा दुःख पल भर में खुशी में बदल गया। शोभा अपने साथ लाई भोजन सामग्री चिड़ियाँ व उपस्थित सभी पक्षियों को खिला दी। अब सभी पक्षी शोभा के साथ जाने के लिए तैयार हो गये। गाड़ी के चारों और पक्षी ही पक्षी बैठ गये। रास्ते में जो भी पक्षी देखते वो आकर गाड़ी पर बैठ जाते। शोभा के गाँव आते–आते पूरी बेलगाड़ी पक्षियों के झुण्ड में बदल गई। पक्षियों का झुण्ड जिसने भी देखा पहले तो सभी डर गये। बाद में सभी गाड़ी के पीछे–पीछे शोभा के मकान तक आ गये। कुछ लोग शोभा को लड़ने लगे कि तुम इन पक्षियों को जंगल से क्यों लाई। ये हमारी फसल को नष्ट कर देंगें। शोभा ने अब तक जो भी किया जैसे भी किया पूरी बात गाँव वालों को बताई। शोभा की बातें सुनकर गाँव वालों में भी मानवता का भावना जागृत हुई और सभी ने निश्चय किया कि हम सब मिलकर प्रत्येक घर से एक मुट्‌ठी अनाज रोज इन पक्षियों को डालेंगे ताकि ये जिंदा रहते हुए हमारे पर्यावरण को संतुलित करने में अपनी भूमिका निभा सके। अब सभी पक्षी बड़े आनन्द के साथ रहने लगे। सभी ने अपने प्राण बचाने के लिए शोभा व गाँव वालों को धन्यवाद दिया।

बेनी प्रसाद शर्मा, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

पतंग उड़ी

पतंग उड़ी भई पतंग उड़ी।
सर–सर, सर–सर पतंग उड़ी।
हवा चली है मस्तानी।
देखो बच्चों राजस्थान।
राजस्थान में हरियाली।
घर–घर में मनाई दिवाली।
दिवाली पर बनाई मिठाई।
सब घरों की हुई सफाई।
हमने उड़ाई पतंग।
पतंग की कट गई डोर।
पतंग उड़ी भई पतंग उड़ी।
सर–सर, सर–सर पतंग उड़ी।

अशोक, उम्र–12 वर्ष, समूह–तिरंगा

बाल श्रृंगार

देखो गाँव में आया नाई।
नाईजी ने ढोलक बजाई।
ढोलक बजी ढम–ढम–ढम।
बच्चे आये धम–धम–धम।
नाई लाया कैंची संग।
कैंची चली कच–कच–कच।
बदले बच्चों के ड़ंग–ड़ंग–ड़ंग।
छोटे सजीले संवरे बाल हमारे।
लगने लगे हम अच्छे प्यारे।

सपना राजावत, शिक्षिका,
उदय सामुदायिक पाठशाला
गिरिराजपुरा।

मीनाक्षी मीना, राजकीय अपर प्राइमरी स्कूल जमूलखेड़ा

कालू, उम्र–9 वर्ष, बावरी बस्ती स.मा.

चिड़िया रानी

चिड़िया रानी चिड़िया रानी।
लगती हो बड़ी सयानी।
दूर–दूर तक जाती हो।
चुग्गा दाना लाती हो।
बच्चों को खिलाती हो।
खुद स्वयं भी खाती हो।
शाम ढले सो जाती हो।
सुबह जल्दी उठ जाती हो।
बच्चों को नहलाती हो।
स्कूल लेकर जाती हो।
बच्चों को पढ़ना सिखाती हो।
बच्चे चीं चीं करते हैं।
पढ़ने की कोशिश करते हैं।

गौरा मीना, उम्र–11 वर्ष, समूह–संगम

फूलों का पेड़

एक फूलों का पेड़ खड़ा था।
जिसमें सुंदर फूल लगा था।
उड़ती–उड़ती तितली आई।
साईकिल को दौड़ाती आई।
साईकिल में एक फूल लगाया।
उड़ती–उड़ती चिड़िया आई।
बच्चे अपने साथ में लाई।
चलते फिरते मोर जी आये।
सुंदर–सुंदर पंख भी लाये।
झिलमिल–झिलमिल बारिश आई।
मोरनी रानी भीगती आई।

ज्योति सैनी,
उम्र–12 वर्ष, समूह–तिरंगा

वर्षना बैरवा,
उम्र–12 वर्ष
उदय सामुदायिक
पाठशाला कटार

कपाल क्रिया

पूनम, उम्र–14 वर्ष, बम्बोरी बस्ती स.मा.

बात उस समय की है जब मैं कक्षा–8 में पढ़ता था। मेरे पड़ौस में किसी व्यक्ति की मृत्यु हो गई थी। उस वक्त पापा घर पर नहीं थे। तो माँ ने कहा बेटा तू दाह संस्कार में चले जाना। यह बात सुनकर मैं डर गया। क्योंकि पहले मैं कभी शमशान घाट पर नहीं गया था। मैंने मना कर दिया पर माँ ने जैसे–तैसे करके वहाँ जाने के लिए राजी किया और मैं शमशान घाट पर चला गया। वहाँ पर कुछ लोग दुःख से रो रहे थे तथा बाकि चिता की तैयारी कर रहे थे। मृत व्यक्ति को चिता पर सुला कर आग लगा दी गई। कुछ समय बाद कपाल क्रिया की गई तथा उसमें घी डाला गया।

यह सब क्रिया मैं ध्यान से देख रहा था। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि ये लोग क्या कर रहे हैं। धीरे से मैंने एक भाई साहब से पूछा, ''ये सब क्या कर रहे हैं?'' उन्होंने कहा कि, ''ये कपाल क्रिया कर रहे हैं।'' मैंने उनसे पूछा, ''ये सब ऐसा क्यों करते हैं?'' उन्होंने कहा, ''अब जीव परमात्मा में विलीन होगा।'' यह बात मेरे समझ में नहीं आई की जीव तो इसका पहले ही निकल चुका है। अब इसकी खोपड़ी को डण्डे से फोड़कर उसमें घी डाल रहे हैं, ऐसा क्यों? भाई साहब से इसका मुझे संतोषजनक जवाब नहीं मिला। यह प्रश्न समय–समय पर मेरे दिमाग में आता और कभी किसी से पूछ लेता। 2 वर्षों तक मुझे इसका जवाब नहीं मिला। आखिर जब मैं कक्षा 10 में विज्ञान की पुस्तक को पढ़ा तो उसमें लिखा था कि शरीर की सबसे मजबूत व कठोर हड्डी खोपड़ी की होती है। इस लाईन को पढ़कर समझ में आया कि इसी कारण लोग चिता के समय खोपड़ी को जलने के बाद फोड़कर उसमें घी डालते हैं। जिससे कि यह पूर्ण रूप से जल जाये। इसी प्रश्न को लेकर पुनः मैं अपने अध्यापक के पास गया और उनसे यह मन का प्रश्न पूछा तो उन्होंने वही बताया जो मैंने इस लाईन को पढ़कर समझा था। बाद में मैंने इसका उत्तर भाई साहब को बताया। वे मेरी समझ पर सहमत हुए और कहा विज्ञान में जो तुमने पढ़ा है वह सही है।

बेनी प्रसाद शर्मा, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

जोड़–तोड़

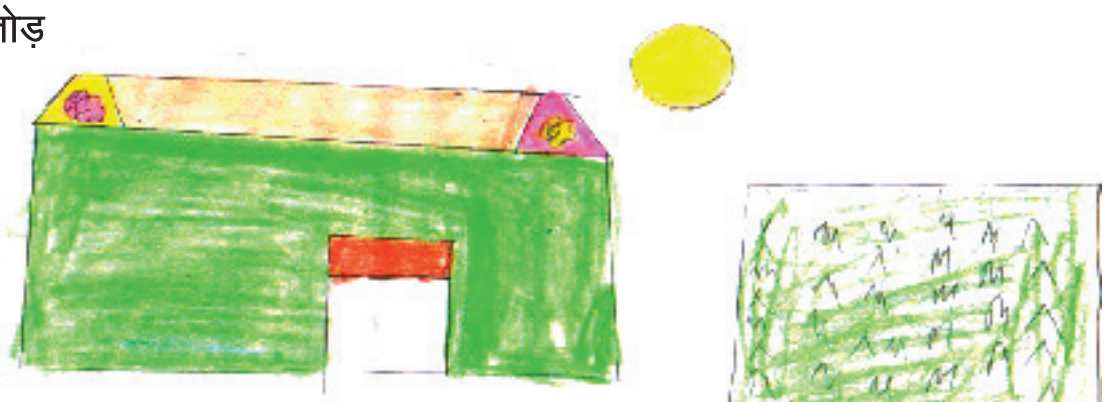

दिलवर मीना, कक्षा–4, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

बंटवारा

बहुत समय पहले की बात है। रेतीले टीलों के बीच आबादी से बहुत दूर एक किसान अपने तीन बेटों के साथ रहता था। इस निर्जन इलाके में खाने–पीने की चीजों का अभाव रहता था। इसलिए किसान ने अपनी जरूरतों के लिए ऊँट पाल रखे थे। उसके पास कुल सत्रह ऊँट थे। उसकी और उसके बेटों की सभी जरूरतें ऊँट और उनसे मिलने वाली चीजों से ही पूरी होती थी। ऊँट ही उनकी आय का मुख्य स्रोत थे।

रेगिस्तान में एक स्थान से दूसरे स्थान पर आने–जाने और सामान लाने–ले जाने के लिए ऊँटों की जरूरत सबको पड़ती थी। इसी लिए तो इसे रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है। किसान अपनी आय बढ़ाने के लिए ऊँटों को किराये पर देता था।

एक दिन किसान का अचानक देहांत हो गया। पर मरने से पहले वह अपने तीनों बेटों के लिए ऊँटों के बटवारे की शर्त लिख चुका था। अंतिम संस्कार और जरूरी काम पूरे करने के बाद तीनों बेटों ने सामान की तलाशी ली तो उनको किसान का लिखी हुई वसीयत मिली। जब तीनों ने वसीयत पढ़ी तो दंग रह गये। वसीयत में सारा सामान तीनों भाईयों को तीन भागो में बराबर बांटा गया था परन्तु सत्रह ऊँटों को एक अलग तरीके से विभाजित किया था। उन्हे तीनों में समान रूप से साझा नहीं किया गया क्योंकि 17 एक विषम संख्या होने के साथ–साथ एक अभाज्य संख्या है। जिसे बांटा नहीं जा सकता है। किसान ने लिखा था कि सबसे बड़ा बेटा 17 ऊँटों में से आधे का मालिक होगा। बीच वाले को 17 ऊँटों का एक तिहाई हिस्सा मिलेगा और सबसे छोटे बेटे को 17 ऊँटों का नौवां हिस्सा मिलेगा।

वसीयत में वर्णित 17 ऊँटों को कैसे विभाजित किया जाए। सभी वसियत को

माउती गाड़िया लोहार,
उम्र–9 वर्ष, लुहार बस्ती खण्डार

पढ़कर दंग रह गए और एक दूसरे से सवाल किया। 17 ऊँटों को विभाजित कर आधे ऊँट बड़े को देना संभव नहीं है। अन्य दो बेटों के लिए ऊँटों को विभाजित करना भी संभव नहीं है। उन्होने कई दिनों तक वसीयत में वर्णित ऊँटों को विभाजित करने के तरीकों पर विचार किया। लेकिन किसी को भी इसका जवाब नहीं मिला। वे अंत में इस मुद्दे को अपने गाँव के बुद्धिमान व्यक्ति के पास ले गए। बुद्धिमान व्यक्ति ने समस्या सुनी और तुरंत एक समाधान पाया। उसने उन्हे सभी 17 ऊँटों को अपने पास लाने के लिए कहा।

बेटे ऊँटों को बुद्धिमान व्यक्ति के स्थान पर ले आए। बुद्धिमान व्यक्ति ने अपना एक ऊँट उनमें जोड़ दिया और ऊँटों की कुल संख्या 18 कर दी। अब उसने पहले बेटे को वसीयत पढ़ने को कहा। पिता की इच्छा के अनुसार, बड़े बेटे को आधे ऊँट मिले, जो अब 18/2 = 9 है। इस तरह सबसे बड़े बेटे को उसके हिस्से के रूप में 9 ऊंट मिले। शेष बचे 9 ऊंट।

बुद्धिमान व्यक्ति ने दूसरे बेटे को वसियत पढ़ने के लिए कहा। उसे कुल ऊँटों का 1/3 मिलना था। जो 18/3 =6 ऊंट आया। तो दूसरे बेटे को उसके हिस्से के रूप में 6 ऊँट मिले।

अब तीसरे बेटे ने अपनी हिस्सेदारी की वसीयत पढ़ी। जो ऊंटो की कुल संख्या का 1/9 वां हिस्सा थी। मतलब 18/9 =2 ऊँट। सबसे छोटे बेटे को उसके हिस्से के रूप में 2 ऊँट मिले। इस तरह से भाइयों द्वारा साझा किए गए 9+6+2 ऊंट थे। जिनकी गिनती 17 ऊंटों के बराबर थी। अब 1 ऊंट बचा था जो बुद्धिमान व्यक्ति का था। जिसे बुद्धिमान व्यक्ति ने वापस ले लिया। इस तरह बुद्धिमान व्यक्ति ने अपनी बुद्धिमता से इस समस्या को बड़ी चतुराई से हल कर दिया।

स्रोत–विष्णु गोपाल

कलाकारी

सतीश गुजराल

कृष्ण, कक्षा–7, राजकीय अपर प्राइमरी स्कूल कुतलपुरा मलियान

दीपावली उसे अपने बिस्तर पर बैठकर खाली समय बिताने का एक बढ़िया जरिया मिल गया। वह अपने बनाए चित्रों के पन्ने भरने लगा। उसके चित्रों में उसकी मन की भावना भी नजर आने लगी– कभी गुस्सा, कभी विनय, कभी हास्य। उसके रेखाचित्र बहुत अच्छे होते थे। मगर उसके पिता इस बात से खुश नहीं थे। उन्होंने उसकी चित्र कॉपियाँ फाड़कर फेंक दी। उन्होंने सतीश से कहा, ''यह एक प्रकार से समय की बर्बादी है। बेहतर होगा कि पढ़ने में ज्यादा समय लगाओ, जिससे सीखने व जानने को कुछ मिलेगा।''

सतीश को पिता की यह बात अच्छी नहीं लगी। उसने चित्रकारी छोड़ने से मना कर दिया। पिता का मानना था कि चित्रकार ज्यादा कमा नहीं सकते और गरीबी में जीते हैं। एक होनहार बालक के लिए यह रोजगार का अच्छा साधन नहीं है। अगर उसे अपनी जिंदगी में कुछ बनना है तो उसे ज्यादा से ज्यादा पढ़ाई करनी होगी। उसकी सुनने की ताकत कभी भी लौट सकती है और उस वक्त के लिए उसे स्कूल जाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

उसे बीमार पड़े तीन साल से ज्यादा हो चुके हैं। ''यह आप कैसे कह सकते हैं कि उसके सुनने की ताकत वापस आ जायेगी?' माँ ने पूछा। वह अपने बेटे की बीमारी से निराश हो चुकी थी। मगर सतीश के पिता ने अपनी उम्मीद नहीं छोड़ी थी।

डाक्टरों के लगातार आकर जाँच व ईलाज करने के बाद भी सतीश की हालत

में सुधार नहीं हो रहा था। वह अपने सन्नाटे की दुनिया में ही डूबा रहता था। उसके मन को ढांढस बांधने का एकमात्र जरिया चित्रकारी ही थी। जो कि उसके पिता को बिल्कुल पसंद नहीं थी।

एक दिन जब वह अपनी तश्तरी में रंग मिला रहा था तब अचानक अपने पिता को दरवाजे पर खड़ा देखा। उसके पिता धीरे–धीरे चलते हुए उसके पास आकर बैठ गये।

सीमा मीना, कक्षा–9, उमंग

''तुम जो कुछ कर रहे हो, बहुत खराब कर रहे हो। क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता?'' उन्होंने सतीश से पूछा। उसने अपने पिता की आवाज के कंपन को सुन लिया। उसने कोई जवाब नहीं दिया। थोड़ी देर बाद उसके पिताजी वहाँ से चले गये। कुछ घंटों बाद जब वे लौटे तो वे अपने साथ कई तरह के रंग और ब्रश तथा ड्राइंगशीट के कई रोल ले आये थे।

''ये सब तुम्हारे लिए है, सतीश। मैं तुम्हारे लिए बढ़िया आर्ट कॉलेज का पता लगाऊँगा। तुम वहाँ चित्रकारी सीखकर अपने मनपसंद पेशे में अपनी जिंदगी बनाओ।'' सतीश की आँखे भर आई और अचानक वह अपने पिता से लिपट गया। अपने कठोर पिता के लिए उसके मन में प्यार उमड़ आया। उन्होंने आखिरकार समझ लिया था कि सतीश के जीवन की मंजिल कैनवास और पेंटिंग ही थी।

सतीश गुजराल देश के जाने माने चित्रकारों में से एक है। वह एक लेखक भी हैं। पदमविभूषण से सम्मानित हैं। उनकी सफलता इस बात का प्रमाण है कि कोई भी शारीरिक कमी किसी के विकास में रूकावट नहीं बनती।

एक दुर्घटना के कारण इनकी 8 साल की उम्र में ही सुनने की क्षमता खत्म हो गई थी और उनकी टांगों का भी कई बार ऑपरेशन होने के बाद वे खड़े होने लगे थे।

('बच्चे जिन्होंने कमाल किया' पुस्तक से साभार।)

लेखक–तगामणि

स्रोत–शैलेन्द्र सिंह राजावत, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

स्कूल मेरा घौंसला

सपना बैरवा
उम्र–12 वर्ष,
उदय सामुदायिक
पाठशाला, कटार

स्कूलों की सुगबुगाहट, शोर शराबा जो बिल्कुल थम सा गया था वो पुनः वापस, एक अनिश्चित कालीन लॉकडाउन के बाद फिर से जीवंत हो रहा है। मन में एक उमंग थी। बच्चों के अंदर की खुशी को देखना। मन में वही चेहरे, पुराने दिन बार–बार झलक रहे थे। गाँव के रास्ते के दोनों और बड़े–बड़े पौधे उग आये थे। बच्चों को पुरानी दिनचर्या में देखकर अभिभावक, शिक्षक सभी प्रसन्न हैं। स्कूल के खालीपन ने स्कूल परिसर की तस्वीर ही बदल दी। जिसमें बरसात के मौसम की अहम भूमिका रही है। परिसर में घांस–फूंस उग आये हैं और काफी बड़े भी हो गये हैं। बच्चे और शिक्षक फिर से अपने स्थान को साफ करने लगे जहाँ जहाँ धूल ने कब्जा कर लिया है। अनायास ही स्कूल के अंदर बच्चों के आने से कुछ मेहमानों को अपने घर से बेदखल होना पड़ रहा है। मेहमान दो गौरैया चिड़िया है। अचानक कमरे में इतने लोगों को देख, बार–बार कमरे के अंदर–बाहर आ जा रही है। इतने दिनों की अनुपस्थिति में चिड़िया ने अपने रहने के लिए स्कूल के कमरे को चुना था। वह इतने लोगों को देख परेशान जरूर है पर तिनका तिनका लाकर घर बनाने की कोशिश लगातार जारी है। असफल होने पर वही तिनका नीचे बैठे बच्चे पर गिर रहा है। शायद चिड़िया अब यहाँ से दूर जाने को विवश हो जाये। वह अंदर से डरी हुई है। बच्चों को घर से बिछुड़ने का दर्द भलीं–भांति पता है तो चिड़िया का दर्द भला कैसे अलग हो सकता है। चिड़िया को बिना परेशान किये बच्चे अपनी पढ़ाई में मगन रहे। चिड़ियों का चहकना सुबह की ताजगी और अपनेपन का

अहसास करा रहा है। क्योंकि यही आवाज वो अपने घरों में रोज सुनते हैं। ग्रामीण जीवन में पशु–पक्षी और इंसान इसी तरह साथ रहते हैं। उन्हें एक–दूसरे से कोई आपत्ति नहीं होती। छोटी उम्र में ही विस्थापन का दर्द महसूस करचुके बच्चों के लिए ही तो उदय सामुदायिक पाठशाला की स्थापना हुई है।

प्रवीण उरांव, समन्वयक

वर्षा गाड़िया लोहार, उम्र–10 वर्ष, लुहार बस्ती खण्डार

समुद्र तट की सेर

दिवाली की छुट्टियों में हम द्वारकाधीश घूमने गये। मैं बहुत खुश था। जब हम वहाँ पहुँचे तो रात हो चुकी थी। मेरे मम्मी–पापा ने हॉटल में एक कमरा खुलवाया और हम लोग खाना खाकर वहाँ सो गये। अगले दिन सुबह नहा धोकर हम मंदिर में दर्शन के लिए गये और बहुत सी जगह घूमे भी। वहाँ पर नारियल के बहुत सारे पेड़ थे। मैंने पहली बार समुद्र देखा था। वहाँ पर बहुत सारी नाव थी। हम लोग नाव में भी बैठे। मेरी बहन बहुत डर गई। लेकिन मुझे बहुत मजा आया। नाव में घूमने के बाद मैंने रेत में भी घर बनाया। हमने वहाँ नारियल भी खाया। शाम होते ही हम लोग वापस हॉटल में आ गये। ट्रेन रात की थी इसलिए मुझे नींद आ गई। जब मेरी नींद खुली तो हम घर आ चुके थे

नरेन्द्र, उम्र–6 वर्ष, समूह–फुलवारी

माथापच्ची

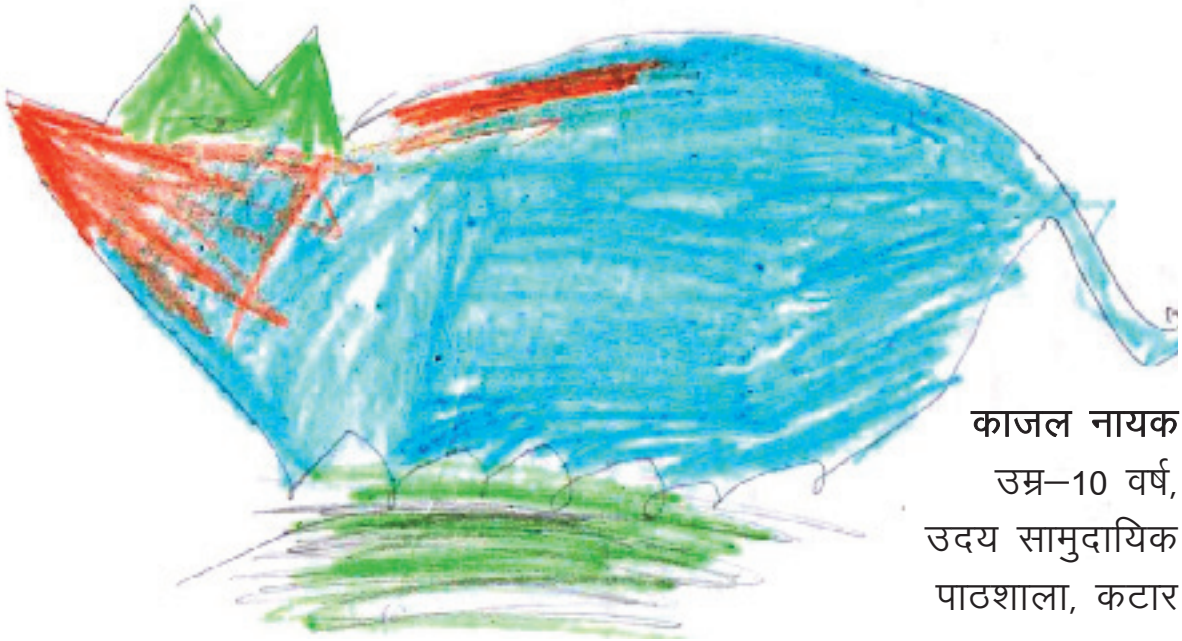

काजल नायक
उम्र–10 वर्ष,
उदय सामुदायिक
पाठशाला, कटार

1. मुझ पर चढ़ के जाते हैं, चप्पल जूते लाते हैं, अपना काम चलाते हैं।
2. टेडी–मेड़ी होती हूँ, दूर दूर तक जाती हूँ, सबको घर पहुँचाती हूँ।
3. धरती से आसमान, आसमान से धरती का सफर तयः करता हूँ, सबकी जान बचाता हूँ।
4. ठण्डी–ठण्डी होती हूँ, रंग–बिरंगी दिखती हूँ, सबका जी ललचाती हूँ।
5. रंग–बिरंगी होती हूँ, धूल, धूप, बारिश से बचाती हूँ।

भारती मीना, उम्र–13 वर्ष, समूह–उजाला

हीहीही ठीठीठी

1. शिक्षक छात्र से – आज देर से क्यों आए?

छात्र – सर रास्ते में बारिश और कीचड़ इतना ज्यादा था कि एक कदम आगे बढ़ाता तो दो कदम पीछे सरकता था।

शिक्षक – तो ये बताओं जब तुम दो कदम पीछे सरकते थे तो स्कूल कैसे पहुंचे?

छात्र – सर फिर मैने स्कूल की बजाए घर की तरफ चलना शुरू कर दिया।

2. मरीज डॉक्टर से कहता है, ''डॉक्टर साहब ऑपरेशन जरा ध्यान से करना। ये मेरा पहला ही ऑपरेशन है।''

डॉक्टर बोला, ''चिन्ता मत करो, मेरा भी यह पहला ही ऑपेरेशन है।''

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

आसमान में तारे हजार
सिर पर पगड़ी पहने हजार ....

पिंकी मीना, उम्र–11 वर्ष, समूह–रंगोली द्वारा शुरू की गई इस कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजें।

बैसे तो चतरू पढ़ाई में बुरा नहीं था। उसके टीचर भी उसे नए–नए तरीकों से उसे पढ़ाते थे। घर वाले भी समय–समय पर ध्यान देते रहते थे। पर उसे तो पढ़ना लिखना पसंद ही नहीं था। अक्सर अपने टीचर से कहता की मैं तो खेलने आता हूं और खिलाड़ी बनने के लिए पढ़ाई लिखाई करने की क्या जरूरत है?.....

चतरू द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजें।

गौरव गुर्जर, कक्षा–4, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

शिवानी माली, कक्षा–7
राजकीय अपर प्राइमरी विद्यालय, कुतलपुरा

पहेलियों के ज़वाब –

1. सिढ़ी 2. सड़क 3. पानी 4. आईस्क्रिम 5. छतरी

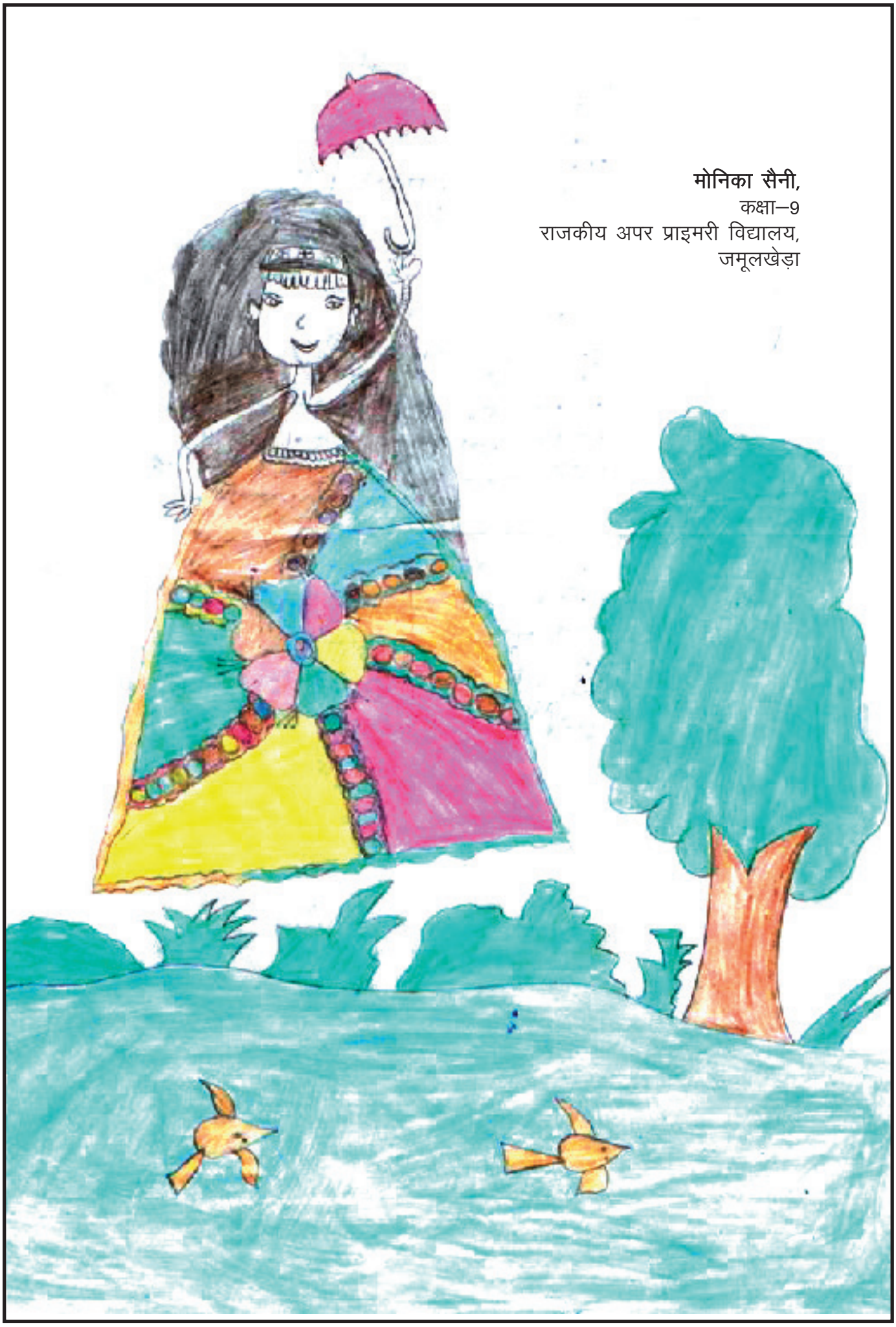

मोनिका सैनी,
कक्षा–9
राजकीय अपर प्राइमरी विद्यालय,
जमूलखेड़ा